इकाई 4 राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का विकास

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1. प्रस्तावना

4.2 स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठभूमि

4.2.1 आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद से पहले

4.2.2 आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का उदय

4.3 राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का विकास

4.3.1 पहला चरण 1857 से 1905 तक

4.3.2 दूसरा चरण 1905 से 1919 तक

4.3.3 तीसरा चरण 1919 से 1947 तक

4.4 स्वाधीनता आंदोलन का व्यापक परिप्रेक्ष्य

4.4.1 संदर्भ : संस्कृति और समाज

4.4.2 संदर्भ : आधुनिक भारतीय साहित्य

4.5 मूल्यांकन

4.6 सारांश

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.8 बोध प्रश्नों / अभ्यासों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में हमने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का परिचय दिया है। इसमें स्वाधीनता आंदोलन के महत्व से तथा संस्कृति और समाज पर उसके व्यापक प्रभाव से आपको परिचित कराया जाएगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भारतीय राष्ट्रवाद के उदय की पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे / सकेंगी;
- पराधीन भारत के लोगों की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को समझ सकेंगी / सकेंगे;
- अंग्रेजों द्वारा भारत के आर्थिक शोषण के प्रभाव को स्पष्ट कर सकेंगे / सकेंगी;
- स्वाधीनता आन्दोलन के विकास–क्रम को तथा विकास–क्रम में आने वाले विभिन्न सामयिक कार्यक्रमों और आन्दोलनों को बता सकेंगी / सकेंगे;
- स्वाधीनता आन्दोलन की महत्वपूर्ण घटनाओं से परिचित हो सकेंगी / सकेंगे;
- स्वाधीनता आन्दोलन में हिस्सेदारी निभाने वाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों, संगठनों की भूमिका का ठीक–ठाक आकलन कर सकेंगी / सकेंगे; और
- आधुनिक भारतीय साहित्य पर स्वाधीनता आन्दोलन के प्रभाव को समझ सकेंगी / सकेंगे और उसका मूल्यांकन कर सकेंगी / सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के विकास का विभिन्न चरणों में अध्ययन करेंगे। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से संबंधित इस इकाई में हमनें 1857 के बाद के इतिहास का परिचय दिया है। 1857 से 1947 के बीच के इस आंदोलन को मुख्यतः तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है :

पहला चरण : 1857 से 1905 तक

दूसरा चरण : 1905 से 1919 तक

तीसरा चरण : 1919 से 1947 तक

इस अवधि में ब्रिटिश उपनिवेशवाद और अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के शोषण के विरुद्ध राष्ट्रवादी व्यक्तियों और संगठनों द्वारा आन्दोलन चलाये गये। भारत की जनता में स्वतंत्रता के लिए नयी जागृति पैदा हुई। इन आन्दोलनों के हिंसक–अहिंसक दोनों रास्ते थे लेकिन आन्दोलन का मुख्य स्वर अहिंसा के पक्ष में था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और गांधी जी के नेतृत्व से इसी स्वर को बल मिला।

आपके लिए यह जानना आवश्यक है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की पृष्ठभूमि क्या थी। आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उदय से पहले क्या स्थितियाँ थीं। उभारने वाले कारण क्या थे। हमने इस इकाई में ऊपर बताए गए आंदोलन के तीनों चरणों का भी संक्षिप्त लेखा–जोखा पेश किया है।

स्वाधीनता आंदोलन का प्रभाव हमारे समाज और संस्कृति पर किस रूप में पड़ा। इस पर भी इकाई में विचार किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रभाव पर भी रोशनी डाली गई है। अंत में स्वाधीनता आंदोलन के महत्व तथा उसके अवदान पर विचार किया गया है। आशा है इकाई को पढ़ने से आपको राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के विकास को समझ सकेंगे।

4.2 स्वाधीनता आन्दोलन की पृष्ठभूमि

इस भाग में हम भारत में अंग्रेजों का राज कैसे स्थापित हुआ। इस राज का मूल चरित्र क्या था और इसने भारत का किस तरह शोषण किया, इस पर विचार करेंगे।

4.2.1 आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद से पहले

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद से ही मुगल साम्राज्य लड़खड़ाने लगा था। शीघ्र ही उसने अपनी शक्ति और वैभव को खो दिया। अमीरों द्वारा कठपुतली बादशाह सिंहासन पर बैठाये, उतारे जाते थे। इस कमजोरी का लाभ उठाकर क्षेत्रीय और प्रांतीय शासकों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। इस प्रकार शक्ति का विकेन्द्रीकरण हो गया। इन शक्तियों में आपसी संगठन के अभाव में बाहरी आक्रमणों के समय उनके लिए गंभीर खतरा उपस्थित हो गया। इसी समय विभिन्न यूरोपीय कम्पनियों (पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी) का व्यापारी वर्ग के रूप में भारत में आगमन हुआ। अन्ततः सभी पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का वर्चस्व स्थापित हो गया। धीरे–धीरे कम्पनी का लोभ बढ़ता गया और उसने स्थानीय शासकों की कमजोरी और आपसी ईर्ष्या का लाभ उठाते हुए उनके शासन में हस्तक्षेप करना आरंभ कर दिया।

1757 के प्लासी युद्ध और 1764 के बक्सर युद्ध में भारतीय शक्तियों के पराजित होने के बाद से ही भारत में अंग्रेजी व्यापारिक संस्था ईस्ट इंडिया कम्पनी का एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उदय हुआ। धीरे–धीरे समस्त भारतीय शक्तियों को समाप्त करती हुई वह पूरे भारत की शासक बन गयी। सम्पूर्ण रूप में भारत का शासक हो जाने के बाद भी ब्रिटिशों का मूल चरित्र विदेशी ही रहा। उन्होंने न भारत को अपना देश माना, न उसके विकास के लिए ठोस प्रयत्न किये। इसके पूर्व जिन तुर्कों ने भारत को जीता था वे यहाँ के निवासी हुए और इन्होंने इस देश को बनाने सँवारने में सीधी रुचि ली। ब्रिटिश शासकों ने अपने आर्थिक लाभों को ही प्राथमिकता दी और भारतीय किसानों, शिल्पकारों, दस्तकारों का अतिशय शोषण किया।

4.2.2 आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का उदय

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म ब्रिटिश आधिपत्य की चुनौती के रूप में हम अंग्रेजों द्वारा शासित होना ही भारत के आर्थिक पिछड़ेपन का आधार बनता गया स्वाधीनता आन्दोलन का आधार मुख्यतः यही तथ्य और संदर्भ था। विदेशी शासन भारत के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक और राजनीतिक विकास में प्रमुख बाधक तत्व बन चुका था। किसानों की उपज का एक बड़ा हिस्सा लगान के नाम पर ले लिया जाता था। इस कार्य में अंग्रेजों के सहयोगी व जमींदार, भूस्वामी, व्यापारी और सूदखोर थे जो किसानों का शोषण करते ओर धोखा देकर उनकी जमीन हथिया लेते। किसानों के अंसतोष को पुलिस और सेना द्वारा दबा दिया जाता था। नवशिक्षित भारतीयों का उभरता वर्ग अपने देश की राजनीतिक–आर्थिक स्थिति को समझने के लिए नये–नये प्राप्त आधुनिक ज्ञान का प्रयोग कर रहा था। 1857 में जिन लोगों ने ब्रिटिश शासन का समर्थन इस आशा में किया था कि वह भारत को आधुनिक तथा औद्योगिक देश बनायेगा, उन्हें भी अब निराश होना पड़ा। भाषण, प्रेस तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगते जा रहे थे। अंग्रेजों ने भारतीयों को स्वशासन की दृष्टि से अयोग्य घोषित कर दिया। साम्राज्यवादी सरकार की व्यापार, चुंगी, कर तथा यातायात संबंधी नीतियाँ नये तथा कमजोर भारतीय पूंजीपति वर्ग के विकास में बाधक थीं। उन्हें अधिक सुविधा प्राप्त विदेशी पूँजीपतियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती थी। भारत में विदेशी शासन का अंत तक समर्थक जमींदार, भूस्वामी तथा राजे–महाराजाओं का वह वर्ग बना रहा जिनके हित विदेशी शासकों के हितों से सम्बन्धित थे। इन्हीं परिस्थतियों में आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद की सच्ची भावना का विकास हुआ। जनता के हृदय में देशभक्ति की भावना का उभार इन्हीं स्थितियों के दबाव से संभव हुआ।

बोध प्रश्न–1

नोटः नीचे दिये प्रश्नों का सही उत्तर दीजिए और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1. अंग्रेजों के भारत–आगमन का मूल या प्राथमिक उद्देश्य क्या था :

   क) उपनिवेश बनाना

   ख) व्यापार करना

   ग) शासन करना

   घ) भारतीयों की सहायता करना ( )

2. आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म किस रूप में हुआ ?

   क) सांस्कृतिक चेतना के उभार के रूप में

   ख) ब्रिटिश आधिपत्य की चुनौती के रूप में

   ग) सुधारवाद की प्रेरणा के रूप में ( )

3. नवशिक्षित भारतीयों का वर्ग नये–नये प्राप्त आधुनिक ज्ञान का प्रयोग किसलिये कर रहा था?

   क) सांस्कृतिक चेतना के प्रचार–प्रसार के लिए।

   ख) अपनी स्वतंत्रता की अनुभूति के लिए।

   ग) अपने देश की राजनीतिक–आर्थिक वास्तविकता को समझने के लिए। ( )

4.3 राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का विकास

वैसे तो 1757 ई. से ही भारत में अंग्रेजों के आधिपत्य के विरुद्ध संघर्ष आरंभ हो गया था। सन्यासी, फकीर आंदोलनों तथा किसानों के अन्य आंदोलनों ने अंग्रेजों के आधिपत्य को समय–समय पर चुनौती दी पर ये आंदोलन न तो अपने चरित्र में राष्ट्रीय थे और न ही उनके लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्त करना था, वरन् वे स्वतः स्फूर्त विरोध आंदोलन थे। लेकिन इनका महत्व यह है कि इनसे साबित होता है कि भारतीयों ने अंग्रेजों का प्रभुत्व कभी स्वीकार नहीं किया।

4.3.1 पहला चरण 1857 से 1905 तक

मार्क्स एवं एंगेल्स ने 1857 के भारतीय विप्लव का अध्ययन करते हुए माना था कि यह विप्लव उत्पीड़ित राष्ट्रों के उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष का अभिन्न अंग था। 19 वीं शताब्दी में भारत का एकीकरण हो चुका था और वह एक राष्ट्र के रूप में उभर चुका था। इसलिए भारतीय जनता में राष्ट्रवादी भावना का विकास स्वाभाविक था। अंग्रेजों ने धीरे–धीरे पूरे देश में सरकार की एक समान आधुनिक प्रणाली लागू कर दी थी। ग्रामीण आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के विनाश और अखिल भारतीय स्तर पर उद्योग तथा व्यापार का प्रसार हो जाने से देश के भिन्न–भिन्न भागों में रहने वाले लोगों के आर्थिक हित परस्पर जुड़ गये थे। रेल, तार तथा केन्द्रीकृत डाक व्यवस्था ने भी देश की जनता और नेतृत्व सूत्रों के आपसी संपर्क को प्रोत्साहित किया। शिक्षा के आधुनिक पश्चिमी रूप के प्रचार प्रसार के कारण भारतीयों ने बुद्धिसंगत आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष, जनतांत्रिक तथा राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाया। रूसो, जान स्टुअर्टमिल, तथा अन्य पाश्चात्य विचारक उनके राजनीतिक मार्गदर्शक बन गये। विदेशी दासता के अपमान की पीड़ा भरी अनुभूति इसी आधुनिक शिक्षित वर्ग को हुई। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने भारतीयों को इस दृष्टि से तैयार किया कि वे राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व कर सकें और उसे जनतांत्रिक आधार दे सकें। इस आधुनिक शिक्षा और शिक्षा माध्यम अंग्रेजी के साथ भारतीय जनता का दुहरा सम्बन्ध बना। एक ओर अंग्रेजी विभिन्न क्षेत्रों की जनता को जोड़ने में सहायक हुई, दूसरी ओर शिक्षित नगर जनों और ग्रामीण अशिक्षित या अल्पशिक्षित जनों के बीच व्यवधान पैदा करने लगी। वस्तुतः साधारण जनता में आधुनिक विचारों का प्रसार विकासमान भारतीय भाषाओं, उनमें विकसित हो रहे साहित्य तथा भारतीय भाषाओं के लोकप्रिय संचार माध्यम (प्रेस) द्वारा संभव हुआ। उन्नीसवीं सदी उत्तरार्द्ध के पत्रों ने सरकारी नीतियों की नियमित आलोचना के लिए उपयुक्त मंच सुलभ

किया। इस समय लिखे जा रहे राष्ट्रीय साहित्य ने भी राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में योगदान दिया। बंगला में बंकिमचंद्र, रवींद्रनाथ ठाकुर, मराठी में विष्णुशास्त्री चिपलुणकर, तमिल में सुब्रमन्यमभारती, उर्दू में अल्ताफ हुसैन हाली तथा हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान इस दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व का है।

उन्नीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध राष्ट्रवादी चेतना के क्रमिक विकास और संगठित राष्ट्रीय आन्दोलन के आरंभिक उदय का दौर है। राजा राममोहन राय ऐसे पहले भारतीय नेता थे जिन्होंने राजनैतिक सुधार के लिए आन्दोलन का सूत्रपात किया। उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता, जूरियों द्वारा मुकदमों की सुनवाई, कार्यपालिका और न्यायपालिका के अलगाव, उच्चतर पदों पर भारतीयों की नियुक्ति तथा भारत में औद्योगिक विकास के लिए संघर्ष किया। स्वाधीनता, जनतंत्र, राष्ट्रीयता उनकी सुधार चेतना के प्रमुख मुद्दे थे। भारत में पहली राजनीतिक संस्था 1838 में कलकत्ता में 'लैंड होल्डर्स सोसायटी' नाम से बनी। इस तरह की अन्य संस्थाएं थीं–'ब्रिटिश इंडिया सोसायटी' 'ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन' मद्रास नेटिव एसोसिएशन'। इन सभी पर अभिजात वर्ग का प्रभुत्व था। उन्होंने ब्रितानी भारतीय शासन के सामने राजनीतिक आर्थिक मांगे रखीं। जैसे प्रशासनिक सेवाओं में अधिक संख्या में भारतीयों की नियुक्ति आदि। 1858 के बाद के दौर में शिक्षित भारतीय भारत में ब्रिटिश नीतियों के मुखर आलोचक बन गये। 1866 में लंदन में दादाभाई नौरोजी ने भारतीय प्रश्नों पर विचार विमर्श करने और ब्रितानी जनता के पत्र को प्रभावित करने के उद्देश्य से 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' की स्थापना की। भारत के बड़े नगरों में उसकी शाखाएँ स्थापित की गयीं। दादाभाई नौरोजी ने अपना पूरा जीवन राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति समर्पित कर दिया। अपने अर्थशास्त्रीय अध्ययन में उन्होंने दिखाया कि भारत की गरीबी का कारण अंग्रेजों द्वारा उसका शोषण और यहाँ का धन ब्रिटेन भेजना था। भारतीय धन के विदेश जाने की वही पीड़ा भारतेन्दु हरिश्चंद्र जैसे लेखकों ने अनुभव की। स्वदेशी के सिद्धांत का प्रथम प्रयोग 19वीं शताब्दी के सातवें दशक में भारतीय उद्योग को ब्रितानी उत्पादकों के हमले से बचाने की प्रणाली के रूप में सामने आया। सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी और आनंद मोहन बोस के नेतृत्व में 1876 में 'इंडियन एसोसिएशन' का गठन हुआ। 1870 में जस्टिस रानाडे, गणेश वासुदेव जोशी, एस.एच चिपुलुणकर तथा अन्य लोगों ने 'पूना सार्वजनिक सभा' की स्थापना की।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

विदेशी शासन और शोषण के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन की स्थापना का समय आ चुका था। भारतीय नागरिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी ए.ओ. ह्यूम ने प्रमुख भारतीय नेताओं के समर्थन से 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अधिवेशन का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता वोमेश चंद्र बैनर्जी ने की। राष्ट्रीय कांग्रेस के घोषित उद्देश्य थे : देश के विभिन्न भागों के राष्ट्रवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित करना, जाति, धर्म, प्रांत के भेद से परे राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करना, जनप्रिय मांगों को सरकार के सामने रखना देश में जनमत को प्रशिक्षित और संगठित करना। कहा जाता है कि ह्यूम का उद्देश्य था राष्ट्रीय कांग्रेस को प्रोत्साहन देते हुए शिक्षित भारतीयों और किसानों के विरोध अथवा असंतुष्ट मानसिकता को शांत रखना। पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उत्तरोत्तर भारतीय जनता की राष्ट्रीय भावाना के अनुरूप अपनी गतिविधियाँ निर्धारित करनी थीं।

प्रारंभिक दौर के राष्ट्रवादियों ने साम्राज्यवाद का आर्थिक विश्लेषण करते हुए आर्थिक शोषण के प्रतिरोध का संकल्प किया। भारतीय उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी अर्थात् भारतीय मालों के उपयोग तथा विदेशी चीजों के बहिष्कार की मांग की गयी। 1896 में पूना

तथा महाराष्ट्र के अन्य नगरों में विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी। किसानों पर करों का बोझ कम करने, मालगुजारी घटाने, नमक कर समाप्त करने तथा बागान मजदूरों के काम की परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए प्रशासन पर लगातार दबाव डाला गया।

1885 से 1892 तक भारतीय राष्ट्रवादी, विधायी परिषदों के प्रसार और सुधार की मांग करते रहे। फलस्वरूप 1892 में भारतीय परिषद कानून पारित करना पड़ा। आगे ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर रह कर ही स्वशासन का दावा पेश किया गया। कांग्रेस के मंच से इसकी पहल गोखले और नौरोजी ने की। आर्थिक दृष्टि से उच्च पदों पर यूरोपीय एकाधिकार को भी चुनौती दी गयी। 1897 में बम्बई की सरकार ने बालगंगाधर तिलक तथा अन्य नेताओं और समाचार पत्र–संपादकों को सरकार के विरुद्ध असंतोष को बढ़ावा देने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया। मुकदमा चलाकर उन्हें कैद की लम्बी सजाएँ दी गयीं। नाट् बंधु के रूप में विख्यात पूना के दो नेताओं को बिना किसी मुकदमे के अंडमान भेज दिया गया। इस तरह के दमन को देशव्यापी विरोध का सामना करना पड़ा। बाल गंगाधर तिलक की छवि महाराष्ट्र से निकलकर अखिल भारतीय नेता की हो गयी। जनता ने उन्हें 'लोकमान्य' की उपाधि दी।

1905 तक भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन पर नरमपंथी राष्ट्रवादियों का ही प्रभुत्व था। नरमपंथियों की राजनीतिक कार्य पद्धति कानून की सीमा में रहकर संवैधानिक आन्दोलन चलाने की थी। वे भारतीय जनता में राजनीतिक चेतना और राष्ट्रीय भावना को विकसित करते हुए एक शक्तिशाली जनमत तैयार करना चाहते थे। इसी क्रम में भारतीय पक्ष को सामने रखने के लिए प्रमुख भारतीयों के दल ब्रिटेन भेजे गये। 1889 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक ब्रिटिश समिति बनायी गयी। 1890 से 'इंडिया' नामक पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ। सब मिलाकर फिलहाल योजना ब्रिटिश शासन के चरित्र के रूपांतरण की ही थी जो भारतीय जनता को आधुनिक विकास के रास्ते पर ले जा सके।

प्रारंभिक दौर के राष्ट्रीय आन्दोलन की बुनियादी कमजोरी उसके सामाजिक आधार की संकीर्णता में थी। जनता व्यापक रूप से आन्दोलन के प्रति आकृष्ट नहीं हुई थी। उसका प्रभाव क्षेत्र नगरों तक और अधिक प्रबुद्ध या शिक्षित वर्ग तक ही सीमित था। नरमपंथी नेताओं ने जनता के सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनैतिक पिछड़ेपन को ही देखा। वे यह देख नहीं सके कि जनता के पास ही साम्राज्यवाद विरोधी लम्बा संघर्ष छेड़ने की अकूत संकल्पशक्ति थी। पर आगे कांग्रेस ब्रिटिश अधिकारियों के हाथों की कठपुतली बनने के लिए तैयार न थी। आरंभिक राष्ट्रीय आन्दोलन ने अपनी सीमाओं में भारतीय जनता को राष्ट्रीय जागृति के लिए तैयार किया। जनतंत्र, नागरिक स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता तथा राष्ट्रवाद के विचारों को लोकप्रिय बनाया, भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चरित्र को निर्ममतापूर्वक उजागर किया। उन्होंने जो जमीन बनायी उसी पर आगे राष्ट्रीय आन्दोलन और अधिक विकसित हुआ।

4.3.2 दूसरा चरण 1905 से 1919 तक

उन्नीसवीं सदी के अंत तक भारतीय राष्ट्रवादियों का आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया था। तिलक, अरविंद घोष और विपिन चंद पाल ने राष्ट्रवादियों का आह्वान किया कि वे भारत की जनता के संघर्षशील चरित्र को पहचानें। स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा रहा था कि अब राष्ट्रीय आन्दोलन को शिक्षित वर्ग से निकलकर बृहत्तर जनता तक फैल जाना चाहिए। शिक्षित भारतीयों की संख्या और बेरोजगारी में वृद्धि होने से यही शिक्षित वर्ग उग्र राष्ट्रवाद का प्रबल अनुयायी सिद्ध हुआ। आयरलैंड, मिश्र, तुर्की और जापान के क्रांतिकारी आन्दोलनों ने भारतीयों को विश्वास दिया कि यदि जनता एकजुट और बलिदान के लिए तैयार हो तो वह शक्तिशाली निरंकुश सरकारों के लिए चुनौती बन सकती है।

उग्र राष्ट्रवाद का अस्तित्व : राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारंभ से उग्र राष्ट्रवाद का एक सम्प्रदाय देश में मौजूद था जिसके प्रतिनिधि बंगाल में राजनारायण बोस और अश्विनी कुमार दत्त तथा महाराष्ट्र में विष्णुशास्त्री चिपलुणकर जैसे नेता थे। इस सम्प्रदाय के सबसे महत्वपूर्ण नेता थे बालगंगाधर तिलक जिन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति समर्पित कर दिया था। न्यू इंग्लिश स्कूल (बाद में फर्ग्यूसन कॉलेज) की स्थापना, अंग्रेजी में 'मराठा' तथा मराठी में 'केसरी' नामक पत्रों का प्रकाशन 'गणपति' और 'शिवाजी' जैसे उत्सवों का आयोजन विशेष रणनीति के अंग थे। 1896–97 में उन्होंने महाराष्ट्र के अकालपीड़ित किसानों को संगठित किया कि वे मालगुजारी न चुकायें। विपिन चंद्र पाल, अरविन्द घोष, लाला लाजपत राय उग्र राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने वालों में थे। 1905 तक भारत में अनेक ऐसे नेता थे जो स्वभाव से ही उग्र असहिष्णु तथा विद्रोही थे।

बंगाल का विभाजन : 1905 में बंगाल के विभाजन के साथ ही भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का दूसरा चरण प्रारंभ होता है। 20 जुलाई 1905–कर्जन के आदेश से बंगाल बँट चुका था। वास्तविक उद्देश्य था बंगाल में राष्ट्रवाद के प्रसार को नियंत्रित करना। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और बंगाल के राष्ट्रवादियों ने इस विभाजन का डटकर विरोध किया। बंगाल की समस्त जनता विरोध में उठ खड़ी हुई। बंगाल के राष्ट्रीय नेताओं के प्रयत्न से बंगभंग विरोधी–आन्दोलन के साथ स्वदेशी आन्दोलन और बहिष्कार आन्दोलन में तेजी आयी। रवीन्द्र नाथ ठाकुर के प्रसिद्ध गीत 'आमार सोनार बांग्ला' की यही पृष्ठभूमि है जिसे बंगाल की जनता सड़कों पर गाती। उल्लेखनीय है कि 1971 में बंगला देश ने इसी को अपना राष्ट्रीय गीत स्वीकार किया। 'बन्देमातरम' (बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय) रातों रात बंगाल में लोकप्रिय हो गया। वही राष्ट्रीय आन्दोलन के आभार के दौर में राष्ट्रगान बना। स्वदेशी के पक्ष में आत्मनिर्भरता का मंत्र फूंकने वालों में प्रमुख थे रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रजनीकांत सेन, सैयद अबू मुहम्मद, मुकंददास आदि। ब्रिटिश शासन की दमन नीति में भी तेजी आ चुकी थी। लाला लाजपत राय, अश्विनीकुमार दत्त जैसे नेताओं को देश से निष्कासित कर दिया गया। 1908 में तिलक को भी देश निकाला दिया गया। वे मांडले भेजे गये। उग्र राष्ट्रवादियों ने स्वदेशी और विभाजन विरोधी आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी जन आन्दोलन बनाने का प्रयत्न किया। अरबिन्द घोष ने कहा–'राजनीतिक स्वंतत्रता किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु है।' अब भारत की पूर्ण स्वतंत्रता राष्ट्रीय आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य थी। भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का यह एक क्रांतिकारी मोड़ था।

क्रांतिकारी संगठनों की भूमिका : 1905 के बाद बंगाल के 'सन्ध्या' और 'युगान्तर' तथा महाराष्ट्र के 'काल' आदि समाचार पत्र क्रान्तिकारी आतंकवाद को समर्थन देने लगे थे। 1908 में खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चन्द्र चाकी ने मुजफ्फरपुर में जज फिंग्सफोर्ड के घर में एक बम फेंका। प्रफुल्ल चाकी ने स्वयं को गोली मार ली। खुदीराम को फाँसी दे दी गयी। क्रांतिकारियों की गुप्त संस्थाओं में प्रमुख थी– 1906 में बारीन्द्र घोष द्वारा गठित 'अनुशीलन समिति'। घोष ने दिल्ली में वायसराय हार्डिंग पर भी बम फेंका। लंदन में श्याम जी कृष्णवर्मा, विनायक दामोदर सावरकर और लाला हरदयाल ने क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन किया।

विभाजन के विरोध में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन और बहिष्कार आन्दोलन का समर्थन किया। नरमपंथी और गरमपंथी राष्ट्रवादियों के मतभेद प्रकट हुए। शासन को इसका लाभ मिल रहा था। गरमपंथियों के दमन में तेजी आयी। नरमपंथियों को अपनी तरफ मिलाने की कोशिश की गयी। कुछ संवैधानिक सुधारों की घोषणा भी नरमपंथियों को अनुकूल करने के लिए की गयी। 1911 बंगभंग को रद्द करके पश्चिमी और

पूर्वी बंगाल को फिर एक कर दिया गया। बिहार और उड़ीसा नामक दो प्रांत अलग बना दिये गये। केन्द्र सरकार की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित कर दी गयी।

देश में बढ़ रही राष्ट्रवादी भावना के प्रसार के कारण कांग्रेस द्वारा 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस के दोनों गुटों को फिर निकट लाने की कोशिश की गयी। कांग्रेस मुस्लिम लीग को भी एक दूसरे के निकट लाने के लिए तिलक और मुहम्मद अली जिन्ना ने प्रयत्न किये। शिक्षित मुस्लिम युवक उग्र राष्ट्रवाद की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। 1914 में सरकार ने अबुलकलाम आजाद के पत्र 'अल–निलाल' और मौलाना मुहम्मद अली के 'कामरेड' को बंद कर दिया। कुछ सुधारों की फिर घोषणा की गयी पर भारतीय राष्ट्रवाद उससे संतुष्ट न था।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राष्ट्रवाद की मुख्यधारा के साथ–साथ साम्प्रदायिकता के लक्षण भी जहाँ–तहाँ दिखाई दे रहे थे। 1857 के विद्रोह में हिन्दू–मुसलमान साथ–साथ लड़े थे। इधर ब्रिटिश अधिकारियों ने धार्मिक आधार पर उन्हें बाँटने की कोशिश की। 1880 के आसपास सैयद अहमद खान ने अपने पूर्ववर्ती प्रगतिशील विचारों को छोड़कर घोषणा की कि हिन्दुओं और मुसलमानों के राजनीतिक हित एक दूसरे से अलग हैं। शिक्षा, व्यापार उद्योग में मुसलमानों के राजनीतिक हित एक दूसरे से अलग हैं। शिक्षा, व्यापर, उद्योग में मुसलमानों का पिछड़ापन भी अलगाववादी प्रवृत्ति के लिए एक प्रमुख कारण था। साम्प्रदायिक इतिहासकार भी भारतीय इतिहास के मध्यकाल की व्याख्या 'मुस्लिम काल' के रूप में कर रहे थे और इस प्रकार भारतीय साँझी संस्कृति के विरुद्ध अलगाववाद को बढ़ावा दे रहे थे। यह भी कम दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है कि उग्र राष्ट्रवादियों के वक्तव्य अतिरिक्त 'हिन्दू रंग' लिये हुए थे। तिलक ने शिवाजी और गणपति उत्सवों को प्रतिष्ठा दी। आतंकवादी 'काली' के समक्ष शपथ लेते थे। धर्म और राजनीति का यह मिश्रण मुसलमानों में भ्रम फैला सकता था। फिर भी हसरत मोहानी और अबुल कलाम आजाद जैसे मुस्लिम बुद्धिजीवी राष्ट्रीय आन्दोलन में शरीक थे क्योंकि उसका मुख्य चरित्र धर्मनिरपेक्ष ही बना रहा। गांधी जी, चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, अबुलकलाम आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खान, सुभाषचंद्र बोस, सरदार पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, चक्रवर्ती राजगोपालचारी के आ जाने पर राष्ट्रीय आन्दोलन अधिक मजबूत और अधिक धर्मनिरपेक्ष हुआ। फिर भी साम्प्रदायिकता निर्मूल न हुई। इसी समय कतिपय हिन्दू सम्प्रदायवादी मध्यकाल में मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के उत्पीड़न का प्रश्न उठा रहे थे। बिहार तथा संयुक्त प्रांत में भाषा के सवाल को साम्प्रदायिक रंग देने की कोशिश की जा रही थी। 1909 में पंजाब हिन्दू सभा की स्थापना इसी साम्प्रदायिकता की एक कड़ी है।

स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है : 1915–16 में दो होम रूल लीगों की स्थापना हुई जिनमें एक के नेता थे लोकमान्य तिलक और दूसरे की श्रीमती एनी बेसेंट और एस. सब्रमण्यम अय्यर। उन्होंने पूरे देश में यह मांग प्रचारित की, कि युद्ध के बाद भारत को स्वशासन का अधिकार दिया जाए। इसी आन्दोलन के दौरान तिलक ने अपना प्रसिद्ध नारा दिया : स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। कांग्रेस की निष्क्रियता से खिन्न अनेक नरमपंथी भी इस उग्र आंदोलन में शामिल हो गये। 1913 में अमरीका, कनाडा में बसे भारतीय क्रांतिकारियों ने 'गदर पार्टी' की स्थापना की जिसके प्रमुख नेताओं में थे–लाला हरदयाल, मुहम्मद बरकतुल्लाह, भगवान सिंह, रामचंद्र। गदरपंथियों ने सुदूर पूर्व, दक्षिण पूर्वी एशिया और सम्पूर्ण भारत में सैनिकों से सम्पर्क करके अनेक रेजीमेन्टों को विद्रोह के लिए तैयार किया। पंजाब में सशस्त्र विद्रोह के लिए 21 फरवरी 1915 की तिथि निश्चित की गयी। दुर्भाग्य से इस योजना का पता ब्रिटिश अधिकारियों को पहले ही लग गया। उन्होंने व्यापक स्तर पर गिरफ्तारियाँ करके कैद या फांसी की सजा दी। 1915 में एक असफल क्रांतिकारी

प्रयास में जतीन मुखर्जी पुलिस मुठभेड़ में मारे गये। इस समय भारत से बाहर क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन करने वालों में प्रमुख थे–रासबिहारी बोस, राजा महेन्द्र प्रताप, भाई परमानंद, बाबा गुरमुख सिंह आदि। उन्होंने समाजवादियों और साम्राज्य विरोधी शक्तियों का समर्थन भारत की स्वतंत्रता के लिए प्राप्त किया। राजनीति से दूर रहने वाली 'सरस्वती' (संपादक : महावीर प्रसाद द्विवेदी) पत्रिका ने इसी दौर में दुनिया के अनेक देशों में जारी स्वाधीनता संग्राम से सम्बन्धित टिप्पणियाँ प्रकाशित की।

4.3.3 तीसरा चरण 1919 से 1947 तक

प्रथम विश्व युद्ध (1914–18) के दौरान विदेशी आयात बंद हो जाने के कारण जिन भारतीय उद्योगों को बहुत प्रोत्साहन मिला था, वे युद्ध बंद होने के बाद घाटे के कारण बंद होने लगे। अब फिर से विदेशी पूँजी का भारत में निवेश बड़े पैमाने पर होने लगा। भारतीय समाज के सभी वर्गों को आर्थिक कठिनाइयों का अनुभव हो रहा था। प्रथम महायुद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों ने न केवल अपने उपनिवेशों को स्वतंत्रता देने का वचन भुला दिया, बल्कि जर्मनी और तुर्की के जीते गये क्षेत्रों को आपस में बाँटकर उपनिवेशवाद को बढ़ावा ही दिया। इस दौर में उपनिवेशों की जनता के मन से गोरों की श्रेष्ठता का डर दूर होने लगा। 1917 में लेनिन के नेतृत्व में रूस में हुई बोल्शेविक क्रांति के द्वारा भी राष्ट्रीय आन्दोलनों को काफी प्रेरणा मिली। जार का तख्ता पलटकर विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य की स्थापना की गयी थी। इस क्रांति को जनता के भीतर छिपी अथाह शक्ति से सम्बद्ध करके ही देखा गया। अब भारत के साथ एशिया और अफ्रीका के देशों में भी राष्ट्रवादी आन्दोलन तेजी से आगे बढ़ा।

सरकार विरोधी भावनाओं में हो रही वृद्धि से निपटने के लिए ब्रिटिश सरकार के छूट और दमन नीति के अंतर्गत 'मांटेग्यू चेम्सफोर्ड' सुधारों का उपयोग किया। 1919 का भारत सरकार अधिनियम बनाया गया। इसके अन्तर्गत प्रांतीय विधायी परिषद का आकार बढ़ाने, उसके अधिकांश सदस्यों के निर्वाचन तथा दुहरी शासन प्रणाली के अंतर्गत प्रांतों को अधिक अधिकार देने का प्रावधान था। पर कांग्रेस ने सुधार के ऐसे प्रस्तावों को 'निराशाजनक' बताकर प्रभावी स्वशासन की माँग रखी। सरकार ने सुधार का प्रस्ताव रखने के साथ ही दमन की कार्रवाई भी जारी रखी। मार्च 1919 का रौलेट ऐक्ट इसका उदाहरण था जिससे सरकार को अधिकार दे दिया कि वह किसी भी भारतीय को बिना मुकदमा चलाये जेल में बंद कर सके। इसके विरुद्ध उपजे असंतोष ने व्यापक आन्दोलन का रूप ले लिया। इसी समय महात्मा गांधी भारतीय राजनीतिक आन्दोलन में उभर कर सामने आये और शीघ्र ही उनके हाथों में राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व आ गया। इसके पहले उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद से संघर्ष करते हुए असहयोग और सत्याग्रह जैसे नये अस्त्रों का आविष्कार तथा प्रयोग किया था जिसे भारत में अंग्रेज शासकों के विरुद्ध आजमाने की घड़ी आ गयी थी। गांधी जी पहली बार भारतीय किसानों को राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्यधारा में ला सके। अब समूची जनता आन्दोलन में शामिल थी।

गांधी जी के नेतृत्व में रौलेट ऐक्ट का विरोध करने के लिए फरवरी 1919 में सत्याग्रह सभा का गठन हुआ जिसके सदस्यों द्वारा कानून का उल्लंघन करने, गिरफ्तारी देने और जेल जाने की शपथ ली गयी। इसी समय खादी भी ब्रिटिश शासन के विरोध का प्रतीक बनी। मार्च–अप्रैल 1919 में आन्दोलन में और तेजी आयी। गांधी जी ने 6 अप्रैल 1919 को बड़े पैमाने पर हड़ताल का आह्वान किया। सरकार ने इस व्यापक जन प्रतिरोध का सामना करने के लिए आधुनिक इतिहास का जघन्यतम अपराध किया। 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर (पंजाब) में जनता रौलेट ऐक्ट का विरोध करने वाले सैफुद्दीन किचलू जैसे अपने लोकप्रिय नेताओं की गिरफ्तारी का विरोध करने के उद्देश्य से बड़ी संख्या में (जिसमें स्त्रियों बच्चों

की संख्या कम न थी) जलियाँवाला बाग में एकत्र हुई। अमृतसर के सैनिक कमांडर जनरल डायर ने बाग को घेर कर सैनिक टुकड़ी को भीड़ पर राइफलों मशीनगनों से गोली बरसाने का आदेश दिया। यह सबसे बर्बर हत्याकांड था। पंजाब में मार्शल लॉ लगाकर और भी बर्बर अत्याचार किये गये। विरोध में कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने सरकार द्वारा दी गयी 'नाइट' की उपाधि लौटा दी।

गांधी जी की राजनीतिक गतिविधियाँ इस बीच राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा निर्धारित करने वाली थीं। 1917 में गांधी जी ने सत्याग्रह का पहला प्रयोग चम्पारन, बिहार में किया था जहाँ नील उत्पादक किसान अपने हित तथा अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। गांधी जी ने अहमदाबाद में मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व किया। गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों की फसल नष्ट हो जाने पर लगान न देने के लिए तैयार किया। इसी संघर्ष के दौरान सरदार बल्लभभाई पटेल गांधी जी के अनुयायी बने। गांधी जी जनता के जीवन से अपनी जीवन पद्धति को एकाकार कर चुके थे। उनके उद्देश्यों में हिन्दू मुस्लिम एकता, छुआछूत विरोधी संघर्ष, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में सुधार जैसे संकल्प शामिल थे। इस नयी विचारधारा का प्रभाव साहित्य और संस्कृति पर व्यापक रूप से देखा गया।

साम्राज्यवाद के आलोचक अली बंधुओं (मुहम्मद अली तथा शौकत अली), मौलाना आजाद, हसरत मोहानी के नेतृत्व में गठित खिलाफत कमेटी ने देशव्यापी आन्दोलन छेड़ा। हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए इसे महत्वपूर्ण अवसर मानकर गांधी सहित अनेक कांग्रेसी नेताओं ने इसमें हिस्सेदारी निभायी। इसी ने आगे अहिंसक असहयोग आन्दोलन का रूप लिया। कांग्रेस को अब विदेशी शासन से मुक्ति के राष्ट्रीय संघर्ष में ऐसी संस्थाओं की स्थापना का औचित्य भी समझ में आया जो राष्ट्रीय विचारधारा को व्यापक प्रसार दे सकते थे। इसी दृष्टि से जामिया मिल्लिया इस्लामिया, बिहार, काशी तथा गुजरात विद्यापीठों की स्थापना की गयी।

चौरी चौरा कांड (1922) असहयोग आन्दोलन की ही कड़ी थी पर क्योंकि इसमें हिंसा हुई और क्रूद्ध भीड़ द्वारा थाने में आग लगा देने से 22 पुलिसकर्मी मारे गये अतः गांधी जी ने उन गतिविधियों पर रोक लगा दी जिनसे कानून का उल्लंघन होता था। युवा राष्ट्रवादियों में अधिकांश गांधी जी की रणनीति से संतुष्ट न थे। पहला असहयोग और नागरिक अवज्ञा आन्दोलन इसी तरह समाप्त हुआ।

10 मार्च 1922 को गांधी जी गिरफ्तार किये गये। 6 साल कैद की सजा हुई। खिलाफत आन्दोलन भी प्रासंगिक नहीं रह गया। जहाँ उसने असहयोग आन्दोलन को जन्म दिया, वहीं राजनीति में धार्मिक चेतना और आगे धार्मिक संकीर्णता के प्रवेश को रोक न सका। यद्यपि प्रकट रूप में ये आन्दोलन असफल रहे, पर इन्हीं के प्रभाव से आन्दोलन में किसान, दस्तकार, स्त्रियाँ अर्थात् भारतीय समाज के सभी वर्ग शामिल हुए।

स्वराज्यवादी : चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू अनुभव कर रहे थे कि राष्ट्रवादियों को विधानमंडलों का बहिष्कार समाप्त कर उनमें भाग लेना चाहिए और उनके संचालन में बाधा डालनी चाहिए। 'अपरिवर्तनशील' कहे जाने वाले सरदार पटेल, डा. अंसारी तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद दलील दे रहे थे कि इससे राष्ट्रवादी उत्साह कम होगा और जनता की भागीदारी में उदासीनता आयेगी। कांग्रेस के विरोध के बावजूद दिसम्बर 1922 में 'स्वराज्य पार्टी' की स्थापना की गयी। नवम्बर 23 में केन्द्रीय विधानसभा के चुनावों में स्वराज्यवादियों ने 101 में से 42 सीटें जीतीं। मार्च 1925 में वे विट्ठलभाई पटेल को केन्द्रीय विधान सभा का अध्यक्ष चुनवाने में भी सफल हुए। विदेशी सरकार की निरंकुश नीतियों में बदलाव न आने से उन्हें विधानसभा का त्याग करना पड़ा।

उधर साम्प्रदायिक शक्तियाँ राजनीति में उभरने लगी थीं। दंगों की राजनीति के विरोध में गांधी जी ने मौलाना मुहम्मद अली के घर दिल्ली में 21 दिनों का उपवास (1924) किया। प्रभाव न देखकर वे राजनीति से सन्यास लेने पर विवश थे। 1927 में 'साइमन कमीशन' की घोषणा हुई। इसी समय मार्क्सवाद या समाजवादी विचारधारा का प्रभाव बढ़ा। कांग्रेस के भीतर जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में जो 'वामपंथ' उभरा उसने साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के साथ पूंजीपतियों और जमींदारों के आंतरिक वर्गीय शोषण पर सवाल भी उठाया। मानवेन्द्रनाथ राय कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (मास्को) के प्रथम भारतीय सदस्य थे। 1924 में सरकार ने मुजफ्फर अहमद, श्रीपाद अमृत डांगे और कुछ अन्य लोगों पर कम्युनिस्ट विचारों के प्रचार का आरोप लगाकर 'कानपुर' षडयंत्र का मुकदमा चलाया। 1925 में कम्युनिस्ट पार्टी का विधिवत गठन हुआ। 1928 में गुजरात के बारदोली में किसानों ने कर न देने के लिए पटेल के नेतृत्व में सत्याग्रह चलाया। अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के नेतृत्व में मजदूर संघों का तेजी से विकास हुआ। सबसे बड़ी हड़ताल बम्बई के कपड़ा मिलों में हुई। इस तरह क्रांतिकारी आन्दोलन पुनः सक्रिय हो उठा। अक्तूबर 1924 में सशस्त्र क्रांति के उद्देश्य से एक संगठन 'हिंदुस्तान प्रजातंत्र संघ' नाम से स्थापित हुआ। सरकार ने इस पर कड़ा प्रतिबंध लगाते हुए बड़ी संख्या में आतंकवादी – युवकों को गिरफ्तार कर उन पर 'काकोरी षडयंत्र केस' (1925) चलाया। राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाकल्लाह सहित चार लोगों को फांसी दी गयी। जेल से लिखी हुई बिस्मिल की आत्मकथा एक मार्मिक दस्तावेज है। समाजवादी विचारों से प्रभावित क्रांतिकारियों ने 1928 में चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में अपने संगठन को नया नाम दिया : 'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ'। 30 अक्तूबर 1928 को साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय शहीद हुए। प्रतिशोध में 17 दिसम्बर 1928 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु ने लाठी चार्ज का नेतृत्व करने वाले ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जनरल सांडर्स को गोलियों से भुन दिया। 8 अप्रैल 1929 को भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय विधान सभा में एक बम फोड़ा जिसका उद्देश्य सिर्फ 'बहरों को सुनाना' था, किसी की हत्या करना नहीं। उन्होंने जानबूझ कर अपने को गिरफ्तार कराया। वे अदालत का इस्तेमाल क्रांतिकारी विचारों के प्रचार मंच के रूप में करना चाहते थे। चटगांव (बंगाल) में अप्रैल 1930 में मास्टर सूर्यसेन के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने सरकारी शस्त्रागार पर छापा मारा। इस आन्दोलन में स्त्रियाँ भी शरीक थीं। देशव्यापी जनविरोध के बावजूद भगतसिंह, सुखेदव ओर राजगुरु को 23 मार्च 1931 को फांसी दी गयी। जेल से लिखे अंतिम पत्रों में भगतसिंह ने समाजवाद में अपनी आस्था प्रकट की और धर्मनिरपेक्षता का समर्थन किया। उल्लेखनीय है कि 1926 में पंजाब में भगतसिंह ने 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की थी जिसके उद्देश्यों में साम्प्रदायिक शक्तियों का बहिष्कार भी सम्मिलित था। चंद्रशेखर आजाद 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के एक पार्क में पुलिस का सामना करते हुए मारे गये। सूर्यसेन को 1933 में गिरफ्तार कर फाँसी दी गयी। अनेक क्रांतिकारियों को लम्बी सजाएँ देकर अंडमान के 'सेलुलर जेल' में भेज दिया गया। मेरठ षड़यंत्र केस (1929) में पहले ही कई नेताओं को गिरफ्तार किया जा चुका था। दिसम्बर 1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गांधी जी पुनः सक्रिय राजनीति से जुड़े। जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता वाले 1929 के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज्य' को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया गया। 31 दिसम्बर 1929 को पहली बार स्वाधीनता का नवस्वीकृत तिरंगा झंडा फहराया गया और 26 जनवरी 1930 को पहला स्वाधीनता दिवस घोषित किया गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930) : दूसरा सविनय अवज्ञा आन्दोलन 12 मार्च 1930 को गांधी जी की प्रसिद्ध दांडी यात्रा के साथ शुरू हुआ। गांधी जी अपने 78 अनुयायियों के साथ गुजरात के साबरमती आश्रम से 200 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर समुद्रतट पर स्थित

दांडी ग्राम पहुंचे और 6 अप्रैल 1930 को मुट्ठी भर नमक बनाकर 'नमक कानून' तोड़ा। यह जन विद्रोह का प्रतीक था। स्त्रियों ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और शराब बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया। अब आन्दोलन भारत की उत्तर पश्चिम सीमा पर पठानों तक भी पहुंचा। खान अब्दुल गफ्फार खाँ (सीमांत गांधी) के नेतृत्व में पठानों ने 'खुदाई खिदमतगार' संगठन बना लिया। 'लाल कुर्तीवाला' यह संगठन अहिंसा और स्वाधीनता संघर्ष के प्रति समर्पित था। आन्दोलन की चमक पूर्वी हिस्सों तक भी पहुंची। नागालैंड की वीर बाला रानी गिगल् ने 13 वर्ष की अल्पायु में गांधी जी की प्रेरणा से ब्रिटिश शासन का विरोध किया। 1932 में इस वीरांगना को आजीवन कारावास की सजा दी गयी। उसे अंधेरी काल कोठरी से मुक्ति मिली.....1947 में ही.....भारत के स्वतंत्र होने पर।

आन्दोलन के उभार के दौर में कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। समाचार पत्रों पर कड़ा सेंसर लगा कर उनकी स्वतंत्रता सीमित की गयी। मार्च 1931 में गांधी जी और वायसराय लार्ड इर्विन के बीच समझौते के फलस्वरूप कांग्रेस सविनय अवज्ञा आन्दोलन रोकने पर सहमत हो गयी। गांधी जी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने 1931 में इंग्लैंड गये पर उनकी जोरदार अपील के बावजूद ब्रिटिश सरकार ने भारत को 'डोमिनियम स्टेट्स' का दर्जा देने से इनकार कर दिया। इधर भारत में विश्वव्यापी मंदी के फलस्वरूप कृषि पैदावारों के मूल्य गिर गये। दिसम्बर 1930 में कांग्रेस ने 'न लगान न टैक्स' का अभियान चलाया। सरकारी दमन जारी था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन फिर कमजोर हुआ। कांग्रेस ने मई 1934 में उसे वापस ले लिया। गांधी जी फिर सक्रिय राजनीति से अलग हुए। राजनैतिक कार्यकर्ताओं में निराशा फैली।

1932 में कांग्रेस की उपस्थिति के बगैर लंदन में तीसरा गोलमेज सम्मेलन हुआ। 1935 के भारत सरकार अधिनियम में एक भारतीय संघ में प्रांतीय स्वतंत्रता और केन्द्र में द्वि–सदनात्मक विधायिका की व्यवस्था थी। जुलाई 1937 में ग्यारह में से सात प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बने। कांग्रेस ने दो प्रांतों में सांझी सरकारें बनायीं। 1938 में कांग्रेस रूसी पद्धति पर आर्थिक योजना का विचार स्वीकार किया। 1942 में गांधी जी ने घोषणा की–'जमीन उनकी है जो उस पर मेहनत करते हैं।' यहाँ कुछ और तथ्य उल्लेखनीय हैं–1934 में आचार्य नरेन्द्र देव और जय प्रकाश नारायण ने कांग्रेस समाजवादी पार्टी का गठन किया। 1935 के बाद कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व और सांस्कृतिक क्षेत्र में कम्युनिस्ट विचारों का प्रचार प्रसार पूरन चंद्र जोशी के हाथ में आया। 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ स्थापित हुआ। 1938 में–सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। वर्किंग कमेटी में विरोध के कारण उन्होंने 1939 में इस्तीफा दिया और 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। 1936 में लखनऊ में स्वामी सहजानंद सरस्वती की अध्यक्षता में पहला अखिल भारतीय किसान सम्मेलन हुआ। प्रेमचंद, निराला जैसे लेखक किसान आन्दोलन की भूमिका को महत्वपूर्ण बता रहे थे।

सितंम्बर 1939 में दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हुआ। हिटलर के नेतृत्व में नाजी जर्मनी ने पौलेंड पर आक्रमण कर दिया। भारत की विदेशी सरकार राष्ट्रीय कांग्रेस के परामर्श के बिना ही युद्ध में शामिल हो गयी। प्रतिक्रिया में सभी कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया। अक्तूबर 1940 में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाने का आग्रह किया। इसमें विनोबा भावे आगे आये। दिसम्बर 1941 में अमरीका पर आक्रमण कर जापन भी जर्मनी–इटली की ओर से युद्ध में शामिल हो गया। शीघ्र ही उसने फिलीपीन, हिंद–चीन, इंडोनेशिया, मलाया और बर्मा पर अधिकार कर लिया। और मार्च 1942 में रंगून पर अधिकार करके युद्ध को भारत की सीमाओं तक पहुंचा दिया। कांग्रेसी नेताओं ने जापानी आक्रमण की निंदा करते हुए कहा कि यदि ब्रिटेन तत्काल प्रभावी शक्ति भारतीयों को सौंप दे और युद्ध के बाद पूर्ण

स्वाधीनता का वचन दे तो वे भारत की रक्षा के लिए सहयोग देने को तैयार हैं। ब्रिटिश सरकार ने क्रिप्स के नेतृत्व में मार्च 1942 में एक मिशन भारत भेजा पर क्रिप्स मिशन और कांग्रेस के बीच बातचीत विफल हुई।

भारत छोड़ो आन्दोलन 1942

1942 में जापान की जीत के भय से जनता में चिंता व्याप्त थी पर गांधी जी का तेवर अधिक उग्र हुआ। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की 8 अगस्त 1942 को बम्बई में हुई बैठक में प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया और कहा–'मैं पूर्ण स्वाधीनता से कम किसी चीज से संतुष्ट होने वाला नहीं हूँ।' 9 अगस्त 1942 को गांधी जी तथा अन्य बड़े नेता गिरफ्तार कर लिये गये। कांग्रेस फिर गैरकानूनी घोषित हुई। जन आन्दोलन पूरे देश में तीव्रतर हो गया। स्कूलों कॉलेजों में हड़तालें, व्यापक प्रदर्शन, फायरिंग, दमन–चक्र और तेज हुआ। संयुक्तप्रांत, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, आंध्र, तमिलनाडु, महाराष्ट्र के अनेक भागों में ब्रिटिश शासन प्रभावहीन हो गया। क्रांतिकारियों ने अनेक जगहों पर समानांतर सरकारें बना ली। इस जन विद्रोह के मुख्य आधार थे–छात्र, मजूदर और किसान। आन्दोलन को अब भी निर्मम दमन चक्र चलाकर दबा दिया गया पर अब इतना साफ था कि जनता की इच्छा के बिना शासन चला पाना ब्रिटिश सरकार के लिए असंभव है।

मार्च 1941 में सुभाषचंद्र बोस सोवियत संघ, जर्मनी होते हुए 1943 में जापान पहुँचे ताकि जापानी सहायता प्राप्त कर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष चला सकें। उन्होंने रास बिहारी बोस की मदद से सिंगापुर में 'आजाद हिन्द फौज' गठित की और 'जयहिन्द' का मंत्र दिया। बर्मा से भारत पर आक्रमण करते हुए उन्होंने जापान का साथ दिया। आजाद हिन्द फौज को आशा थी कि वे स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का प्रमुख सुभाष चंद्र बोस को बनाकर भारत में मुक्तिदाताओं के रूप में प्रवेश करेंगे। 1945 में जापान की हार के बाद आजाद हिन्द फौज भी पराजित हुई और सुभाष बोस टोकियो जाते हुए एक वायुयान दुर्घटना के शिकार हो गये।

अप्रैल 1945 में यूरोप में युद्ध समाप्त होने के बाद भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन ने एक नये दौर में प्रवेश किया। सरकार ने लालकिला दिल्ली में आजाद हिन्द फौज के तीन अधिकारियों शाहनवाज खां, गुरुदयाल सिंह ढिल्लो और प्रेम सहगल पर देशद्रोह का आरोप लगा कर उन्हें अपराधी घोषित किया। उनकी रिहाई के लिए विशाल जन प्रदर्शन हुए। फरवरी 1946 में बम्बई में भारतीय नौ सेना का प्रसिद्ध विद्रोह हुआ। ब्रिटेन के स्थान पर उभरी नई शक्तियों अमरीका, सोवियत संघ ने भारत की स्वतंत्रता का समर्थन किया। ब्रिटेन में भी लेबर पार्टी सत्ता में आयी जिसके अनेक सदस्य कांग्रेस की मांगों के समर्थक थे। अंग्रेजों ने जून 1948 तक भारत छोड़ने का निश्चय किया। 1946 के बाद ही हिन्दू–मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। मार्च 1947 में लार्ड माउंटबैटन भारत के वायसराय बनकर आये। उन्होंने दोनों सम्प्रदायों के नेताओं से बातचीत के क्रम में अन्ततः यह हल निकाला कि भारत स्वतंत्र तो होगा पर खंडित होकर। भारत के साथ ही पाकिस्तान एक स्वतंत्र राष्ट्र होगा। देशी रजवाड़ों को किसी भी देश में सम्मिलित होने की छूट दी गयी। गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की कूटनीति के कारण अनेक देशी राज्यों ने भारत का अंग बने रहना ही स्वीकार किया।

अन्ततः भारत ने 15 अगस्त 1947 को पहला स्वतंत्रता दिवस मनाया। यह एक लम्बे संघर्ष का अन्त था और समस्याओं से घिरे एक नये युग का आरंभ। 14 अगस्त की आधी रात को जवाहरलाल नेहरू ने ऐतिहासिक सम्बोधन में कहा था–'मध्यरात्रि को जब बारह का घंटा

बजेगा और सारी दुनिया सो रही होगी तब भारत नये जीवन और स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होगा...। आज हम एक दुर्भाग्यपूर्ण अवधि को समाप्त कर रहे हैं.....भारत को अपने महत्व की अनुभूति हो रही है। आज हम जिस उपलब्धि की खुशी मना रहे हैं वह निरन्तर प्रयासों का फल है.....।'

बोध प्रश्न–2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. 1866 और 1876 के बीच स्थापित तीन संगठनों के नाम लिखिए जिनका स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में विशेष महत्व है :

   क) .....

   ख) .....

   ग) .....

2. राष्ट्रवादियों ने साम्राज्यवाद के किस पक्ष के विश्लेषण पर सबसे पहले जोर दिया? (√) का चिन्ह लगायें :

   क) सामाजिक

   ख) आर्थिक

   ग) नैतिक

3. बंगाल को विभाजित करने के पीछे ब्रिटिश सरकार का क्या उद्देश्य था? रिक्तस्थान में लिखें :

   .....

   .....

4. 'राजनीतिक स्वतंत्रता किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु है' किसका कथन है? (अ) से निर्दिष्ट करें:

   क) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

   ख) भगत सिंह

   ग) अरविन्द घोष

   घ) बंकिम चंद्र

5. खिलाफत आन्दोलन के तीन प्रमुख नेताओं के नाम बताइए:

   क) .....

   ख) .....

   ग) .....

6. समाजवादी विचारों से प्रभावित क्रान्तिकारियों का संगठन इनमें से कौन सा था?

   क) अभिनव भारती

ख) हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ

ग) हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ

घ) गदर पार्टी

7. स्वाधीनता का नवस्वीकृत तिरंगा झंडा पहली बार कब फहराया गया ? सही (अ) के चिन्ह से निर्दिष्ट करें :

क) 1942

ख) 1929

ग) 1947

8. निम्नलिखित संगठन/सम्मेलन का स्थापना समय लिखिए :

क) अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ.....

ख) पहला अखिल भारतीय किसान–सम्मेलन.....

ग) आजाद हिन्द फौज.....

अभ्यास

1) कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य क्या था और क्या अंग्रेज उस उद्देश्य में सफल हुए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्वतंत्रता आंदोलन में समाजवादी विचारों का प्रवेश कब हुआ और उसने क्या प्रभाव डाला?

.....

.....

.....

.....

4.4 स्वाधीनता आंदोलन का व्यापक परिप्रेक्ष्य

स्वाधीनता आंदोलन महज एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था। इसने हमारे जीवन के प्रायः सभी पक्षों पर गहरा असर छोड़ा। राजनीति के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रश्नों पर भी इस अवधि में गहरा मंथन चला और हमने इन सभी क्षेत्रों में नयी दिशाएँ ग्रहण की, नये आदर्श स्वीकार किये। आइए, स्वाधीनता आंदोलन के इस व्यापक परिप्रेक्ष्य पर विचार करें।

4.4.1 संदर्भ : संस्कृति और समाज

स्वाधीनता संघर्ष तथा नव जागरण के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारतीय संस्कृति का विश्लेषण करने वालों ने यूरोप के आधुनिक सांस्कृतिक जागरण और भारतीय सांस्कृतिक जागरण में यह मौलिक भेद बताया है कि यहाँ का सांस्कृतिक जागरण औपनिवेशिक मानसिकता से टकराकर ही विकसित हुआ। पहले चरण के सांस्कृतिक जागरण में अस्मिता की तलाश मुख्य थी। फिर उसी ने राजनीतिक जागरण के लिए जमीन तैयार की। भारत में संस्कृति और राजनीति के बीच सकर्मक सम्बन्ध बना। रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारत के आधुनिक पुनर्जागरण को पश्चिम की आधुनिक दृष्टि से जोड़कर देखते थे पर यहाँ के स्वाधीनता आन्दोलन तथा सांस्कृतिक जागरण में घनिष्ठ सम्बन्ध भी मानते थे। अठारहवीं शताब्दी के बाद जब भारत के राजाओं का प्रभुत्व समाप्त हो गया और वे अंग्रेजों के साम्राज्यवादी शासन में आ गये, भारतीय कला के लिए बहुत संभावनाएँ शेष न थीं। चित्रकला, मूर्तिशिल्प, स्थापत्य अब बहुत कुछ खंडहरों में स्मृति चिन्ह की तरह थे। विदेशी शासन में जो शैक्षणिक संस्थाएं बनीं वे ब्रिटिश रायल एकेडेमी को ही आदर्श मानती थीं। 19वीं शताब्दी के अंत में जब भारत एक राष्ट्र के रूप में उभरा तो कला की शैलियों में राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप परिवर्तन घटित हुआ। कला की लोकोन्मुख और स्थानीयता इसी के उदाहरण हैं। 19वीं शताब्दी में अजन्ता के भित्तिचित्रों, अजन्ता के गुफा मंदिरों के मूर्तिशिल्प का पता चला। नंदलाल बोस जैसे चित्रकारों ने उनसे सीधी प्रेरणा ली। दक्षिण में राजा रवि वर्मा भारतीय पौराणिक कथाओं को अपनी चित्रकला में ढाल रहे थे। बंगला शैली (रवींद्रनाथ, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर) की कला का इतिहास स्वाधीन चेतना के स्पर्श से भरा पुरा है। अमृता शेरगिल की स्थानीयता आधुनिकता को एक नया परिप्रेक्ष्य देती है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन से जो मूल्य विकसित हुए उनका संस्कृति और समाज रचना पर व्यापक प्रभाव पड़ा। वे मूल्य थे–साम्राज्यवाद–उपनिवेशवाद–विरोध, राष्ट्रीयता देशप्रेम, आर्थिक सामाजिक शोषण का विरोध, जनतंत्र, समाजवाद, साम्प्रदायिकता–विरोधी धर्मनिरपेक्ष चेतना। भारतेन्दु के समय में स्वाधीन चेतना की अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य प्रधान अभिव्यक्ति–रूपों या शैलियों का उपयोग किया गया। आगे स्वच्छन्दतावाद, देश–प्रेम, प्रकृ ति प्रेम, राष्ट्रीयता से लगाव को महत्वपूर्ण मानकर शैली और अंतर्वस्तु के रूप में उभरा। हिन्दी छायावादी कवियों में प्रसाद, पंत, निराला में अपने ढंग की स्वाधीन चेतना मौजूद है। प्रसाद के नाट्यगीत (हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती या अरुण यह मधुमय देश हमारा) इसी स्वाधीन चेतना को व्यक्त करते हैं पंत ने 'भारत माता ग्रामवासिनी' लिखकर ग्रामीण संस्कृति के बीच इस स्वाधीन चेतना का मूर्त रूप देखा। निराला के यहाँ स्वाधीन होने का अर्थ ही है निर्भय होना। यह दृष्टि स्वाधीनता–संघर्ष के अनुभवों से ही विकसित हुई थी। 'भारति जय विजय करे' कविता भारती के दुहरे रूपों को व्यक्त करती है जिसमें एक 'सरस्वती' वाला रूप भी है। जागरण की चेतना इसी स्वाधीन चेतना का सहजीवी भाव है। 'जागो फिर एक बार' जैसी कविताएँ इसे प्रभावित करती हैं। प्रकृति में भी प्रभाती विषय कविताएँ इसी जागरण का संकेत देती हैं। स्वाधीनता संघर्ष के क्रम में किसानों का संघर्ष, सत्याग्रह आदि संदर्भ के उपन्यासों से भरे पड़े हैं।

स्वाधीनता की चेतना को पूरे समाज तक फैलाने के प्रयत्न में लेखक राजनीतिक कार्यकर्त्ता इतिहासकार, पत्रकार, समाज वैज्ञानिक साथ थे। 'स्वदेश', 'कर्मवीर' 'प्रताप' जैसी पत्रिकाएँ इस चेतना को वृहत्तर पाठक समुदाय तक ले जाने के प्रयत्न में शामिल थीं नर्तक उदय शंकर भी स्वाधीन चेतना की अभिव्यक्ति के लिए कवि पंत के साथ एक नये तरह का संवाद स्थापित कर रहे थे। लोकगायकों ने लोकगीतों में बार–बार आन्दोलन का स्वर भरा।

4.4.2 संदर्भ : आधुनिक भारतीय साहित्य

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में असमिया के लक्ष्मीनाथ बेजुबरूआ, हेमचंद्र गोस्वामी जैसे लेखक उसी राष्ट्रीय चेतना को वहन कर रहे थे जिसके अपने समय के नवजागरण से गहरा सम्बन्ध था। रवींद्रनाथ का उदय इन्हीं परिस्थितियों के बीच हुआ पर वे परम्परा के अधिक गहरे साहचर्य में स्वाधीन चेतना की अधिक आधुनिक परिकल्पना को रूप और आकार दे सके। 'निर्झरेर स्वप्न भंग' कविता इसी मानसिकता को व्यक्त करती है।

गुजराती साहित्य में गांधी जी के राजनीतिक संघर्ष की छाप अधिक गहरी है। अफ्रीका से गांधी जी की वापसी के साथ पूरे भारतीय मानस में जो उद्वेलन था उसकी गहरी छाप गुजराती के आधुनिक साहित्य में है। रूसी क्रांति जैसी घटनाओं ने भी इस राष्ट्रीय भावना को उभारने में योग दिया। झवेर चंद मेघाणी, पन्नालाल पटेल की कृतियाँ अपने भीतर इसी चेतना को छिपाये हुए हैं। मैथिलीशरणगुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, नवीन, सुभद्राकुमारी चौहान की कविताएँ स्वाधीनता आन्दोलन में प्रकट जन आकांक्षाओं को व्यक्त करती हैं। क्रांति या विप्लव का स्वर इनमें साफ सुना जा सकता है। ईमानदार और कट्टिमनी के उपन्यासों में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की गूंज मौजूद है। विश्वमानवता का संदेश भी यहीं इसी आन्दोलन की प्रेरणा से उभरा। वल्लतोल, कुमारा आशान की मलयालम रचनाएँ इसी चेतना से अनुप्राणित हैं। तमिल के सुब्रमण्यम भारतीय इस चेतना के प्रमुख संदेशवाहकों में हैं। केशवसुत की कविताएँ, हरिनारायण आप्टे के उपन्यास इस स्वाधीन चेतना को व्यक्त करने में सक्षम हैं। उड़िया कथाकार फकीर मोहन सेनापति ने 'छः बीघा जमीन' नामक उपन्यास में बुनकरों और किसानों की जिन्दगी से परिचित कराते हुए एक युग की सामाजिक वास्तविकता की ओर ध्यान आकृष्ट किया। ब्रिटिश उपनिवेशवाद और पश्चिम के प्रभाव से पंजाब अधिक समय तक मुक्त रह सका अतः नव जागरण की चेतना भी वहाँ देर से आयी। भाई वीर सिंह जैसे कवि इस चेतना के वाहक बने। हाली का 'मुसद्दस' उदाहरण है कि राष्ट्रीय चेतना सामाजिक जागृति से घुली मिली चीज है। स्वाधीनता आन्दोलन का क्योंकि अपने आप में एक अखिल भारतीय संदर्भ है इसलिए स्वाभाविक है कि उसका प्रतिबिम्ब समूचे भारतीय साहित्य में मौजूद है।

बोध प्रश्न –3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. यूरोप के आधुनिक सांस्कृतिक जागरण और भारतीय सांस्कृतिक जागरण में मौलिक भेद क्या है? रिक्त स्थान में लिखें।

   .....

   .....

   .....

2. राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन से विकसित ऐसे मूल्यों का उल्लेख करें जिनका आधुनिक भारतीय समाज और संस्कृति पर व्यापक प्रभाव पड़ा :

   क) .....

   ख) .....

   ग) .....

   घ) .....

3. स्वाधीन चेतना को अभिव्यक्ति देने वाले, निम्नलिखित भाषाओं के, एक–एक प्रतिनिधि तथा महत्वपूर्ण लेखक का नामोल्लेख करें :

   क) बंगला .....

   ख) तमिल .....

   ग) गुजराती .....

   घ) हिन्दी .....

4. निम्नलिखित रचनाओं के लेखकों के नाम लिखें :

   क) निर्झरेर स्वप्न भंग : .....

   ख) छह बीघा जमीन : .....

अभ्यास

3. राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का हमारे सांस्कृतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

   .....

   .....

   .....

4.5 मूल्यांकन

इस इकाई को अंत तक पढ़ते हुए हम अनुभव कर सकते हैं कि भारतीय साहित्य में आधुनिकता का उदय अचानक नहीं हुआ। स्वाधीनता आन्दोलन के अभाव में हमारी इस ठेठ देसी आधुनिक दृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती। स्वाधीनता आन्दोलन के समानान्तर ही साहित्य में आधुनिक दृष्टि के लिए, आधुनिकता की पहचान और प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष चलता रहा है। यह एक सच्चाई है कि स्वाधीनता आन्दोलन का परिप्रेक्ष्य व्यापक था। यह संघर्ष कई स्तरों, कई मोर्चों पर चल रहा था। समाज के सभी वर्गों, समुदायों की हिस्सेदारी इसमें बढ़ती गयी। स्त्री शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ ही स्त्रियाँ इस आन्दोलन में आगे आयीं। इससे सामंती संबंध रचना पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में इसने हमारे कलाबोध और सौन्दर्यबोध को प्रभावित किया। छात्र, किसान, मजदूर आगे चलकर ये सभी आन्दोलन को तेज करने में सहायक हुए। इस व्यापक आन्दोलन के मूल में था उपनिवेशवाद विरोध। यह आन्दोलन आधुनिक धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का परिणाम था। स्वाधीनता आन्दोलन ने भारतीय साहित्य की अपनी अस्मिता की पहचान करायी। बंकिम, रवींद्रनाथ, सुब्रमण्यम भारती, प्रेमचंद का साहित्य इसी आन्दोलन से ऊर्जा और स्फूर्ति ग्रहण कर रहा था। इस आन्दोलन में गांधी जी का प्रवेश एक नये युग के उदय का संकेत है। गांधी जी व्यक्तित्व आन्दोलन को जन चरित्री बनाने में दूर तक प्रेरक सिद्ध हुआ।

बोध प्रश्न–4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

1. भारतीय आधुनिकता को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण संदर्भ क्या है?

.....

.....

2. स्वाधीनता आंदोलन में शिक्षित स्त्रियों के आगे आने से साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा?

.....

.....

3. भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की जड़ें कहाँ थीं?

.....

.....

अभ्यास

4. राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से हम क्या–क्या सीख सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

4.6 सारांश

- इस इकाई में आपने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास से परिचय प्राप्त किया। आपने जाना कि भारत में अंग्रेजों का शासन किन परिस्थितियों में स्थापित हुआ। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का क्या महत्व है और भारतीयों ने कांग्रेस की स्थापना से पूर्व अपने अधिकारों के लिए कौन–कौन से संगठन बनाए। आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद की यह पृष्ठभूमि है।

- 1885 में कांग्रेस की स्थापना के साथ स्वाधीनता के लिए संगठित प्रयास शुरू हुआ। आरंभ में कांग्रेस के नेताओं ने अंग्रेजों के प्रति नरम रूख अपनाकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया परंतु उसकी असफलता देखकर बालगंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने संघर्ष का उग्र रास्ता अपनाया। भारतीय राष्ट्रवाद की रीढ़ तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया लेकिन जनता के लगातार प्रतिरोध के कारण 1911 में विभाजन समाप्त करना पड़ा।

- स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है जिन्होंने स्वतंत्रता के आंदोलन को मध्यवर्ग से निकालकर आम जनता तक पहुँचाया। गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती रही और अंग्रेज अपना दमन चक्र चलाते रहे। 1919 के जलियांवाला बाग का हत्याकांड अंग्रेजों के दमन की पराकाष्ठा था।

- कांग्रेस के जन आंदोलनों के साथ–साथ आजादी के लिए क्रांतिकारी गतिविधियाँ भी जारी रहीं। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाकुल्ला खां इनमें अग्रणी थे। 1930 के आसपास ही सोवियत क्रांति के प्रभाव में समाजवादियों और कम्युनिस्टों का प्रभाव बढ़ा। किसानों, छात्रों, मजदूरों के अखिल भारतीय संगठन बने। कांग्रेस की नीतियों में भी वामपंथी रूझान पैदा हुआ।

- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व के बदलने राजनीतिक परिदृश्य तथा जन आंदोलनों के व्यापक होते स्वरूप के कारण ब्रिटेन भारत को स्वतंत्रता देने के लिए विवश हुआ यह स्वतंत्रता देश को विभाजन के साथ मिली।
- राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन ने हमारे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक जीवन पर भी गहरा असर डाला। इस दौर के साहित्य और कला पर, विभिन्न अनुशासनों पर और हमारे संपूर्ण सोच पर स्वाधीनता आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा। आशा है इकाई को पढ़कर आप उपर्युक्त सभी पहलुओं को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

विपन चंद्र, अमलेश त्रिपाठी, बरूण डे : स्वतंत्रता संग्राम, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

विपन चंद्र : भारत का स्वाधीनता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन विदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय

रामलखनशुक्ल (संपादन) : आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय

ए.आर. देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इंडिया लि. दिल्ली

रजनी पाम दत्त : आज का भारत, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस

4.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1) (ख)
2) (ख)
3) (ग)

बोध प्रश्न–2

1) क) ईस्ट इंडिया एसोसिएशन,
   ख) इंडियन एसोसिएशन,
   ग) पूना सार्वजनिक सभा
2) ख)
3) राष्ट्रवाद के प्रसार को नियंत्रित करना।
4) ग
5) क) मुहम्मद अली, ख) मौलाना आजाद, ग) हसरत मोहानी
6) ख
7) ख
8) क) 1936, ख) 1936, ग) 1943

बोध प्रश्न–3

1) भारत का सांस्कृतिक जागरण औपनिवेशिक मानसिकता से टकराकर ही विकसित हुआ।

2) क) साम्राज्यवाद–उपनिवेशवाद विरोध, ख) जनतंत्र, ग) समाजवाद, घ) राष्ट्रीयता

3) क) रवींद्रनाथ ठाकुर, ख) सुब्रमण्यम भारती, ग) झवेरचंद मेघाणी, घ) मैथिलीशरण गुप्त

4) क) रवींद्रनाथ ठाकुर, ख) फकीर मोहन सेनापति

बोध प्रश्न–4

1) स्वाधीनता आंदोलन

2) साहित्य के सौंदर्यबोध और संबंध भावना पर प्रभाव पड़ा।

3) अपनी भूमि और अपनी जनता में।

अभ्यास

1) कांग्रेस की स्थापना के पीछे अंग्रेजों का उद्देश्य राष्ट्रीय कांग्रेस को प्रोत्साहन देते हुए शिक्षित भारतीयों के विरोध को शांत रखना परंतु अंग्रेज इस प्रयास में सफल नहीं हुए। आरंभ में अंग्रेजी सत्ता से वे अपने अधिकारों के लिए आवेदन करते रहे परंतु बीसवीं सदी के आरंभ से ही कांग्रेस एक व्यापक जन आंदोलन का रूप लेने लगी।

2) 1917 की सफल बोल्शेविक क्रांति का असर सारी दुनिया पर पड़ा। भारत में भी 1930 के आसपास समाजवादी विचारों का प्रभाव दिखाई देने लगता है। 1925 में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। कांग्रेस में समाजवादी मंच बना। किसानों, मजदूरों, छात्रों के अखिल भारतीय संगठन बने। इनका असर कांग्रेस की नीतियों पर भी पड़ा। कांग्रेस ने पहली बार सामंत विरोधी भूस्वामी विरोधी प्रस्ताव पारित किये। रियासतों में चलने वाले जन आंदोलन को समर्थन दिया। समाजवादी राज्य स्थापित करने की बातें कांग्रेस मंचों से की जाने लगी।

3) देखिए उपभाग 4.4.1

4) स्वयं लिखिए।